

महाभारत भाषा

अनुशासन पर्व

धर्म, दान, व्रतों का फल, माहात्म्य, ग्राह्याग्राह्य वस्तु
विचार व तपस्वी, धर्मात्माओं के लक्षण
इत्यादि कथायें वर्णन हैं।

श्रीभार्गवश्रेष्ठ मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., की
आज्ञानुसार पण्डित कालीचरण द्वारा अनुवादित।

तीसरी बार

बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., सुपरिंटेंडेंट के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेखाने में छपा
सन् १९१६ ई०।